1. अंग-अंग मुसकाना-(बहुत प्रसन्न होना) - आज उसका अंग-अंग मुसकरा रहा था।

2. अंग-अंग टूटना-(सारे बदन में दर्द होना) - इस ज्वर ने तो मेरा अंग-अंग तोड़कर रख दिया।

3. अंग-अंग ढीला होना-(बहुत थक जाना) - तुम्हारे साथ कल चलूँगा। आज तो मेरा अंग-अंग ढीला हो रहा है।

4. अक्ल का दुश्मन-(मूर्ख) - वह तो निरा अक्ल का दुश्मन निकला।

5. अक्ल चकराना - (कुछ समझ में न आना) - प्रश्न-पत्र देखते ही मेरी अक्ल चकरा गई।

6. अक्ल के पीछे लठ लिए फिरना (समझाने पर भी न मानना) - तुम तो सदैव अक्ल के पीछे लठ लिए फिरते हो।

7. अक्ल के घोड़े दौड़ाना- (तरह-तरह के विचार करना) - बड़े-बड़े वैज्ञानिकों ने अक्ल के घोड़े दौड़ाए, तब कहीं वे अणुबम बना सके।

8. आँख दिखाना- (गुस्से से देखना) - जो हमें आँख दिखाएगा, हम उसकी आँखें फोड़ देगें।

9. आँखों में गिरना-(सम्मानरहित होना) - कुरसी की होड़ ने जनता सरकार को जनता की आँखों में गिरा दिया।

10. आँखों में धूल झोंकना-(धोखा देना) - शिवाजी मुगल पहरेदारों की आँखों में धूल झोंककर बंदीगृह से बाहर निकल गए।

11. आँख चुराना-(छिपना) - आजकल वह मुझसे आँखें चुराता फिरता है।

12. आँख मारना-(इशारा करना) - गवाह मेरे भाई का मित्र निकला, उसने उसे आँख मारी, अन्यथा वह मेरे विरुद्ध गवाही दे देता।

13. आँख तरसना-(देखने के लालायित होना) - तुम्हें देखने के लिए तो मेरी आँखें तरस गई।

14. आँख फेर लेना-(प्रतिकूल होना) - उसने आजकल मेरी ओर से आँखें फेर ली हैं।

15. आँख बिछाना-(प्रतीक्षा करना) - लोकनायक जयप्रकाश नारायण जिधर जाते थे उधर ही जनता उनके लिए आँखें बिछाए खड़ी होती थी।

16. आँखें सेंकना- (सुंदर वस्तु को देखते रहना) - आँख सेंकते रहोगे या कुछ करोगे भी

17. आँखें चार होना-(प्रेम होना,आमना-सामना होना) - आँखें चार होते ही वह खिड़की पर से हट गई।

18. आँखों का तारा-(अतिप्रिय) - आशीष अपनी माँ की आँखों का तारा है।

19. आँख उठाना-(देखने का साहस करना) - अब वह कभी भी मेरे सामने आँख नहीं उठा सकेगा।

20. आँख खुलना - (होश आना) - जब संबंधियों ने उसकी सारी संपत्ति हड़प ली तब उसकी आँखें खुलीं।

21. गरदन झुकाना - (लज्जित होना) - मेरा सामना होते ही उसकी गरदन झुक गई।

22. मुँह में पानी भर आना -(दिल ललचाना) - लड्डुओं का नाम सुनते ही पंडितजी के मुँह में पानी भर आया।

23. मुँह खून लगना - (रिश्वत लेने की आदत पड़ जाना) - उसके मुँह खून लगा है, बिना लिए वह काम नहीं करेगा ।

24. मुँह छिपाना - (लज्जित होना) - मुँह छिपाने से काम नहीं बनेगा, कुछ करके भी दिखाओ।

25. मुँह रखना-(मान रखना) - मैं तुम्हारा मुँह रखने के लिए ही प्रमोद के पास गया था, अन्यथा मुझे क्या आवश्यकता थी।

26. मुँहतोड़ जवाब देना - (कड़ा उत्तर देना) - श्याम मुँहतोड़ जवाब सुनकर फिर कुछ नहीं बोला।

27. मुँह पर कालिख पोतना - (कलंक लगाना) - बेटा तुम्हारे कुकर्मों ने मेरे मुँह पर कालिख पोत दी है।

28. मुँह ताकना - (दूसरे पर आश्रित होना) -अब गेहूँ के लिए हमें अमेरिका का मुँह नहीं ताकना पड़ेगा।

29. मुँह बंद करना-(चुप कर देना) -आजकल रिश्वत ने बड़े-बड़े अफसरों का मुँह बंद कर रखा है।

30. दाँत पीसना - (बहुत ज्यादा गुस्सा करना) - भला मुझ पर दाँत क्यों पीसते हो? शीशा तो शंकर ने तोड़ा है।

31. दाँत खट्टे करना - (बुरी तरह हराना) - भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए।

32. दाँत काटी रोटी-(घनिष्ठता, पक्की मित्रता) - कभी राम और श्याम में दाँत काटी रोटी थी पर आज एक-दूसरे के जानी दुश्मन है।

33. गरदन पर सवार होना - (पीछे पड़ना) - मेरी गरदन पर सवार होने से तुम्हारा काम नहीं बनने वाला है।

34. गरदन पर छुरी फेरना-(अत्याचार करना) -उस बेचारे की गरदन पर छुरी फेरते तुम्हें शरम नहीं आती, भगवान इसके लिए तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेंगे।

35. गला घोंटना - (अत्याचार करना) - जो सरकार गरीबों का गला घोंटती है वह देर तक नहीं टिक सकती।

36. गला फँसाना-(बंधन में पड़ना)- दूसरों के मामले में गला फँसाने से कुछ हाथ नहीं आएगा।

37. गले मढ़ना-(जबरदस्ती किसी को कोई काम सौंपना)- इस बुद्धू को मेरे गले मढ़कर लालाजी ने तो मुझे तंग कर डाला है।

38. गले का हार-(बहुत प्यारा)- तुम तो उसके गले का हार हो, भला वह तुम्हारे काम को क्यों मना करने लगा।

39. मुँह उतरना-(उदास होना)-आज तुम्हारा मुँह क्यों उतरा हुआ है।

40. सिर पर मौत खेलना-(मृत्यु समीप होना)- विभीषण ने रावण को संबोधित करते हुए कहा, 'भैया ! मुझे क्या डरा रहे हो ? तुम्हारे सिर पर तो मौत खेल रही है'।

41. आँखों पर परदा पड़ना - (लोभ के कारण सचाई न दीखना) - जो दूसरों को ठगा करते हैं, उनकी आँखों पर परदा पड़ा हुआ है। इसका फल उन्हें अवश्य मिलेगा।

42. आँखों का काटा - (अप्रिय व्यक्ति) - अपनी कुप्रवृत्तियों के कारण राजन पिताजी की आँखों का काँटा बन गया।

43. आँखों में समाना - (दिल में बस जाना) - गिरधर मीरा की आँखों में समा गया।

44. कलेजे पर हाथ रखना - (अपने दिल से पूछना) - अपने कलेजे पर हाथ रखकर कहो कि क्या तुमने पैन नहीं तोड़ा।

45. कलेजा जलना - (तीव्र असंतोष होना) - उसकी बातें सुनकर मेरा कलेजा जल उठा।

46. कलेजा ठंडा होना - (संतोष हो जाना) - डाकुओं को पकड़ा हुआ देखकर गाँव वालों का कलेजा ठंढा हो गया।

47. कलेजा थामना - (जी कड़ा करना) - अपने एकमात्र युवा पुत्र की मृत्यु पर माता-पिता कलेजा थामकर रह गए।

48. कलेजे पर पत्थर रखना - (दुख में भी धीरज रखना) - उस बेचारे की क्या कहते हों, उसने तो कलेजे पर पत्थर रख लिया है।

49. कलेजे पर साँप लोटना - (ईर्ष्या से जलना) - श्रीराम के राज्याभिषेक का समाचार सुनकर दासी मंथरा के कलेजे पर साँप लोटने लगा।

50. कान भरना - (चुगली करना) - अपने साथियों के विरुद्ध अध्यापक के कान भरने वाले विद्यार्थी अच्छे नहीं होते।

51. कान कतरना - (बहुत चतुर होना) - वह तो अभी से बड़े-बड़ों के कान कतरता है।

52. कान का कच्चा - (सुनते ही किसी बात पर विश्वास करना) - जो मालिक कान के कच्चे होते हैं वे भले कर्मचारियों पर भी विश्वास नहीं करते।

53. कान पर जूँ तक न रेंगना - (कुछ असर न होना) - माँ ने गौरव को बहुत समझाया, किन्तु उसके कान पर जूँ तक नहीं रेंगी।

54. कानोंकान खबर न होना - (बिलकुल पता न चलना) -सोने के ये बिस्कुट ले जाओ, किसी को कानोंकान खबर न हो।

55. नाक में दम करना - (बहुत तंग करना) - आतंकवादियों ने सरकार की नाक में दम कर रखा है।

56. नाक रखना - (मान रखना) - सच पूछो तो उसने सच कहकर मेरी नाक रख ली।

57. नाक रगड़ना - (दीनता दिखाना)- गिरहकट ने सिपाही के सामने खूब नाक रगड़ी, पर उसने उसे छोड़ा नहीं।

58. नाक पर मक्खी न बैठने देना - (अपने पर आँच न आने देना) - कितनी ही मुसीबतें उठाई, पर उसने नाक पर मक्खी न बैठने दी।

59. नाक कटना-(प्रतिष्ठा नष्ट होना) - अरे भैया आजकल की औलाद तो खानदान की नाक काटकर रख देती है।

60. मुँह की खाना-(हार मानना)- पड़ोसी के घर के मामले में दखल देकर हरद्वारी को मुँह की खानी पड़ी।

61. अधजल गगरी छलकत जाए - (कम गुण वाला व्यक्ति दिखावा बहुत करता है) - श्याम बातें तो ऐसी करता है जैसे हर विषय में मास्टर हो, वास्तव में उसे किसी विषय का भी पूरा ज्ञान नहीं-अधजल गगरी छलकत जाए।

62. अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत - (समय निकल जाने पर पछताने से क्या लाभ) - सारा साल तुमने पुस्तकें खोलकर नहीं देखीं। अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत।

63. आम के आम गुठलियों के दाम - (दुगुना लाभ) - हिन्दी पढ़ने से एक तो आप नई भाषा सीखकर नौकरी पर पदोन्नति कर सकते हैं, दूसरे हिन्दी के उच्च साहित्य का रसास्वादन कर सकते हैं, इसे कहते हैं-आम के आम गुठलियों के दाम।

64. ऊँची दुकान फीका पकवान - (केवल ऊपरी दिखावा करना) - कनॉटप्लेस के अनेक स्टोर बड़े प्रसिद्ध है, पर सब घटिया दर्जे का माल बेचते हैं। सच है, ऊँची दुकान फीका पकवान।

65. घर का भेदी लंका ढाए -(आपसी फूट के कारण भेद खोलना) - कई व्यक्ति पहले कांग्रेस में थे, अब जनता (एस) पार्टी में मिलकर काग्रेंस की बुराई करते हैं। सच है, घर का भेदी लंका ढाए।

66. जिसकी लाठी उसकी भैंस - (शक्तिशाली की विजय होती है) - अंग्रेजों ने सेना के बल पर बंगाल पर अधिकार कर लिया था-जिसकी लाठी उसकी भैंस।

67. जल में रहकर मगर से वैर - (किसी के आश्रय में रहकर उससे शत्रुता मोल लेना) - जो भारत में रहकर विदेशों का गुणगान करते हैं, उनके लिए वही कहावत है कि जल में रहकर मगर से वैर।

68. थोथा चना बाजे घना - (जिसमें सत नहीं होता वह दिखावा करता है) - गजेंद्र ने अभी दसवीं की परीक्षा पास की है, और आलोचना अपने बड़े-बड़े गुरुजनों की करता है। थोथा चना बाजे घना।

69. दूध का दूध पानी का पानी - (सच और झूठ का ठीक फैसला) - सरपंच ने दूध का दूध,पानी का पानी कर दिखाया, असली दोषी मंगू को ही दंड मिला।

70. दूर के ढोल सुहावने - (जो चीजें दूर से अच्छी लगती हों) - उनके मसूरी वाले बंगले की बहुत प्रशंसा सुनते थे किन्तु वहाँ दुर्गंध के मारे तंग आकर हमारे मुख से निकल ही गया-दूर के ढोल सुहावने।

71. न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी - (कारण के नष्ट होने पर कार्य न होना) - सारा दिन लड़के आमों के लिए पत्थर मारते रहते थे। हमने आँगन में से आम का वृक्ष की कटवा दिया। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।

72. नाच न जाने आँगन टेढ़ा-(काम करना नहीं आना और बहाने बनाना)- जब रवींद्र ने कहा कि कोई गीत सुनाइए, तो सुनील बोला, 'आज समय नहीं है'। फिर किसी दिन कहा तो कहने लगा, 'आज मूड नहीं है'। सच है, नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

73. बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख- (माँगे बिना अच्छी वस्तु की प्राप्ति हो जाती है, माँगने पर साधारण भी नहीं मिलती) - अध्यापकों ने माँगों के लिए हड़ताल कर दी, पर उन्हें क्या मिला ? इनसे तो बैक कर्मचारी अच्छे रहे, उनका भत्ता बढ़ा दिया गया। बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख।

TELEGRAM GROUP

ज्वाइन

UPTET GROUP - JOIN NOW

CTET GROUP - JOIN NOW

अगर आप CTET , UPTET या किसी भी STATE का TET एग्जाम की तैयारी कर रहे हैं तो ये ग्रुप जरूर ज्वाइन कर लीजिये ।

FREE EBOOK

HANDWRITTEN NOTES

74. मान न मान मैं तेरा मेहमान-(जबरदस्ती किसी का मेहमान बनना)- एक अमेरिकन कहने लगा, मैं एक मास आपके पास रहकर आपके रहन-सहन का अध्ययन करूँगा। मैंने मन में कहा, अजब आदमी है, मान न मान मैं तेरा मेहमान।

75. मन चंगा तो कठौती में गंगा-(यदि मन पवित्र है तो घर ही तीर्थ है) - भैया रामेश्वरम जाकर क्या करोगे ? घर पर ही ईशस्तुति करो। मन चंगा तो कठौती में गंगा।

76. ऊधौ का लेना न माधो का देना = किसी से कोई सम्बन्ध न रखना

77. ऊँट की चोरी निहुरे - निहुरे = बड़ा काम लुक - छिप कर नहीं होता

78. एक पंथ दो काज = एक काम से दूसरा काम

79. एक थैली के चट्टे बट्टे = समान प्रकृति वाले

80. एक म्यान में दो तलवार = एक स्थान पर दो समान गुणों या शक्ति वाले व्यक्ति साथ नहीं रह सकते

81. एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है = एक खराब व्यक्ति सारे समाज को बदनाम कर देता है

82. एक हाथ से ताली नहीं बजती = झगड़ा दोनों और से होता है

83. एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा = दुष्ट व्यक्ति में और भी दुष्टता का समावेश होना

84. एक अनार सौ बीमार = कम वस्तु , चाहने वाले अधिक

85. एक बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देय = अकर्मण्य को कोई भी नहीं रखना चाहता

86. ओखली में सर दिया तो मूसलों से क्या डरना = जान बूझकर प्राणों की संकट में डालने वाले प्राणों की चिंता नहीं करते

87. अंगूर खट्टे हैं = वस्तु न मिलने पर उसमें दोष निकालना

88. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली = बेमेल एकीकरण

89. काला अक्षर भैंस बराबर = अनपढ़ व्यक्ति

90. कोयले की दलाली में मुहं काला = बुरे काम से बुराई मिलना

91. काम का न काज का दुश्मन अनाज का = बिना काम किये बैठे बैठे खाना

92. काठ की हंडिया बार बार नहीं चढ़ती= कपटी व्यवहार हमेशा नहीं किया जा सकता

93. का बरखा जब कृषि सुखाने = काम बिगड़ने पर सहायता व्यर्थ होती है

94. कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर = समय पड़ने पर एक दुसरे की मदद करना

95. खोदा पहाड़ निकली चुहिया = कठिन परिश्रम का तुच्छ परिणाम

96. दोनों हाथों में लड्डू-(दोनों ओर लाभ)- महेंद्र को इधर उच्च पद मिल रहा था और उधर अमेरिका से वजीफा उसके तो दोनों हाथों में लड्डू थे।

97. नया नौ दिन पुराना सौ दिन-(नई वस्तुओं का विश्वास नहीं होता, पुरानी वस्तु टिकाऊ होती है)- अब भारतीय जनता का यह विश्वास है कि इस सरकार से तो पहली सरकार फिर भी अच्छी थी। नया नौ दिन, पुराना नौ दिन।

98. बगल में छुरी मुँह में राम-राम-(भीतर से शत्रुता और ऊपर से मीठी बातें)- साम्राज्यवादी आज भी कुछ राष्ट्रों को उन्नति की आशा दिलाकर उन्हें अपने अधीन रखना चाहते हैं, परन्तु अब सभी देश समझ गए हैं कि उनकी बगल में छुरी और मुँह में राम-राम है।

99. लातों के भूत बातों से नहीं मानते-(शरारती समझाने से वश में नहीं आते)- सलीम बड़ा शरारती है, पर उसके अब्बा उसे प्यार से समझाना चाहते हैं। किन्तु वे नहीं जानते कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते।

100. सहज पके जो मीठा होय-(धीरे-धीरे किए जाने वाला कार्य स्थायी फलदायक होता है)- विनोबा भावे का विचार था कि भूमि सुधार धीरे-धीरे और शांतिपूर्वक लाना चाहिए क्योंकि सहज पके सो मीठा होय।

101. साँप मरे लाठी न टूटे-(हानि भी न हो और काम भी बन जाए)- घनश्याम को उसकी दुष्टता का ऐसा मजा चखाओ कि बदनामी भी न हो और उसे दंड भी मिल जाए। बस यही समझो कि साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

102. अंत भला सो भला-(जिसका परिणाम अच्छा है, वह सर्वोत्तम है)- श्याम पढ़ने में कमजोर था, लेकिन परीक्षा का समय आते-आते पूरी तैयारी कर ली और परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसी को कहते हैं अंत भला सो भला।

103. चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए-(बहुत कंजूस होना)- महेंद्रपाल अपने बेटे को अच्छे कपड़े तक भी सिलवाकर नहीं देता। उसका तो यही सिद्धान्त है कि चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।

104. सौ सुनार की एक लुहार की-(निर्बल की सैकड़ों चोटों की सबल एक ही चोट से मुकाबला कर देते है)- कौरवों ने भीम को बहुत तंग किया तो वह कौरवों को गदा से पीटने लगा-सौ सुनार की एक लुहार की।

105. सावन हरे न भादों सूखे-(सदैव एक-सी स्थिति में रहना)- गत चार वर्षों में हमारे वेतन व भत्ते में एक सौ रुपए की बढ़ोत्तरी हुई है। उधर 25 प्रतिशत दाम बढ़ गए हैं-भैया हमारी तो यही स्थिति रही है कि सावन हरे न भागों सूखे।

106. आ बैल मुझे मार = जान बूझकर लड़ाई मोल लेना

107. आगे नाथ न पीछे पगहा = पूर्ण रूप से आज़ाद होना

108. अपना हाथ जगन्नाथ = अपना किया हुआ काम लाभदायक होता है

109. अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत = पहले सावधानी न बरतना और बाद में पछताना

110. आगे कुआँ पीछे खाई = सभी और से विपत्ति आना

111. ऊंची दूकान फीका पकवान = मात्र दिखावा

112. उल्टा चोर कोतवाल को डांटे = अपना दोष दूसरे के सर लगाना

113. उंगली पकड़कर पहुंचा पकड़ना = धीरे धीरे साहस बढ़ जाना

114. उलटे बांस बरेली को = विपरीत कार्य करना

115. उतर गयी लोई क्या करेगा कोई = इज्ज़त जाने पर डर कैसा

116. आँखों का तारा - बहुत प्यारा

117. आँखें बिछाना - स्वागत करना

118. आँखों में धूल झोंकना - धोखा देना

119. चंडूखाने की बातें करना - झूठी बातें होना

120. चंडाल चौकड़ी - दुष्टों का समूह

121. छिछा लेदर करना - दुर्दशा करना

122. टिप्पस लगाना - सिफारिश करना

123. टेक निभाना - प्रण पूरा करना

124. तारे गिनना - नींद न आना

125. त्रिशंकु होना - अधर में लटकना

***

UPTET PDF GROUP

UPTET के लिए सारे स्टडी नोट्स का PDF फ्री में DOWNLOAD करने के लिए ज्वाइन कीजिये हमारे Telegram चैनल को ।



CLICK NOW